कृषि विभाग– पौधा संरक्षण
पौधा संरक्षण सामयिक सूचना

अंक– 01/2015–16

फूदका कीट (ग्रास हॉपर)

पौधा संरक्षण योजना के कर्मचारियों एवं पदाधिकारियों के सर्वेक्षण प्रतिवेदन तथा प्राप्त सूचनाओं के आधार पर राज्य के विभिन्न भागों से मक्का एवं ईख की फसल ग्रास हॉपर कीट से आकान्त पायी जा रही है। ग्रास हॉपर को किसान फुदका के नाम से भी जानते हैं। इसका व्यस्क 1 से 7 सें0 मी0 लम्बा होता है। इसकी मादा पूरे मौसम में औसतन 200 अंडे देती है। अनुकुल वातावरण मिलने पर अंडों की संख्या 400 तक हो सकती है। मादा व्यस्क आधा से 2 ईंच मिट्टी के अन्दर अंडा देती है। अंडा से अप्रैल– मई में निम्फ (शिशु कीट) निकलते हैं। निम्फ 5 से 6 विकास की अवस्था के बांद 40 से 60 दिनों में व्यस्क बनते है। ग्रास हॉपर की संख्या को नियंत्रित रखने हेतु इसके प्राकृतिक शत्रुओं जैसे– ब्लीस्टर बिट्ल, रॉवर फ्लाई, ग्राउण्ड बिटिल चिड़िया, छिपकिली, मेढ़क, मकड़ी इत्यादि का संरक्षण करना चाहिए। खेत की जुताई, लम्बे घास, खरपात की सफाई कर, खेत में जगह– जगह पक्षी बैठका लगाकर इनकी संख्या को कम किया जा सकता है।

. ग्रास हॉपर कीट मक्का तथा ईख फसल की पत्तियों को एक या दोनों किनारों से खाता है। इसके उग्र आकमण की दशा में सिर्फ मध्य शिरा ही बचा रह जाता है। फलस्वरूप पौधे की वानस्पतिक वृद्धि प्रभावित होती है। इसकी संख्या प्रति वर्ग मीटर 3 से 7 हाने पर इसके जैविक/ रासायनिक नियंत्रण के उपाय करने चाहिए।

जैविक कीटनाशी के रूप में **व्यूभेरिया बेसियाना** एक किलो अथवा **मेटारिजियम एकीडम** एक किलो अथवा नीम तेल (1500 पी0 पी0 एम0) दो से तीन लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से फसल पर छिड़काव करना चाहिए।

रासायनिक कीटनाशी के रूप में मिथाईल पाराथियॉन 2 प्रतिशत धूल अथवा मालाथियॉन 5 प्रतिशत धूल अथवा क्लोरपायरीफॉस 2 प्रतिशत धूल अथवा फेनभेलरेट 0.4 प्रतिशत धूल का 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से भूरकाव यंत्र (डस्टर) द्वारा भूरकाव करना चाहिए अथवा डायक्लोरोभॉस 76 प्रतिशत तरल 300 मिली लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए। भूरकाव/ छिड़काव कार्य संध्या समय (अपराह्न 4.00 बजे के बाद) करना श्रेयष्कर होगा।

सैनिक कीट (आर्मी वर्म)

आर्मी वर्म (सैनिक कीट) एक साथ समूह में फसल पर आकमण करता है एवं मूलतः रात में फसलों की पत्तियों या अन्य हरे भाग को किनारे से काटता है, तथा दिन में यह खेत में स्थित दरार या ढ़ेला के नीचे या घने फसल के छाये में छिपा रहता है।

जिन क्षेत्रों में सैनिक कीट की संख्या अधिक है उन क्षेत्रों में निम्नांकित किसी एक कीटनाशी का छिड़काव तत्काल किया जाय। (i) क्लोरपाइरीफॉस 20 प्रतिशत ई0 सी0 2.5 मिली लीटर प्रति लीटर पानी (ii) प्रोफेनोफॉस 40 प्रतिशत + साइपरमेथ्रीन 4 प्रतिशत ई0 सी0. 1.5 मिली लीटर प्रति लीटर पानी (iii) क्लोरपाइरीफॉस 50 प्रतिशत + साइपर मेथ्रीन 5 प्रतिशत ई0 सी0. 1.5 मिली लीटर प्रति लीटर पानी (iv) लेम्डासाइलो हेलेथ्रीन 5 प्रतिशत ई0 सी0 . 1 मिली लीटर प्रति लीटर पानी (v) डायक्लोरभॉस 76 प्रतिशत तरल, 1 मिली लीटर प्रति 2 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

जिन क्षेत्रों में इसकी संख्या कम हो उन क्षेत्रों में कृषक बन्धु अपने– अपने खेत के मेड़ पर एवं खेत के बीच में जगह– जगह पुआल का छोटा– छोटा ढेर लगा कर रखें। धूप में आर्मी वर्म

(सैनिक कीट) छाया की खोज में इन पुआल के ढेर में छिप जाता है। शाम को इन कीटों को इक्कठा करते हुए नष्ट कर देना चाहिए।

मुजफ्फरपुर, दरभंगा, समस्तीपुर जिलों में जहॉ इस कीट का प्रकोप माह मार्च के द्वितीय/तृतीय सप्ताह में हुआ था, उन क्षेत्रों में कीट की अगली पीढ़ी से मूंग, सब्जी आदि की फसल प्रभावित न हो, इसके लिए खेत की सतत निगरानी करते रहने की आवश्यकता है।

जगह– जगह अग्रेजी के टी (**T**) आकार का बर्ड पर्चर लगाना चाहिए, ताकि पक्षी इस पर बैठकर इसके पिल्लूओं को खा सके।

छिड़काव कार्य प्रातः काल या देर संध्या समय करना चाहिए। खेत के चारो ओर पहले छिड़काव करते हुए पूरे खेत में छिड़काव करना चाहिए।

जो फसल बढ़वार अवस्था में है, उस खेत में सिंचाई करके भी इस कीट का प्रवंधन किया जा सकता है क्योंकि इस कीट के पिल्लू जमीन पर रेंगते हुए ही एक खेत से दूसरे खेत की ओर बढ़ते हैं। सिंचाई के पानी के साथ क्लोरपायरीफॉस 20%EC मिलांया जाना श्रेयष्कर होगा।

विशेष जानकारी एवं सुविधा के लिए नजदीक के पौधा संरक्षण केन्द्र/ सहायक निदेशक, पौधा संरक्षण/ जिला कृषि कार्यालय अथवा कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से सम्पर्क करें।

ह0/–
संयुक्त निदेशक, पौधा संरक्षण,
बिहार, पटना।

ज्ञाप संख्या– 19–4/पौ0सं0सर्वे0/15–16– 409 /कृ0,पटना, दिनांक– 08 अप्रैल, 2015 ।

प्रतिलिपिः– केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी (सभी)/केन्द्र निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, पटना की सेवा में प्रेषित करते हुए आग्रह है कि कृपया जनहित में उपर्युक्त सूचनाओं को कृषि कार्यक्रमों में प्रसारित करने की कृपा की जाय।

प्रतिलिपिः– सहायक निदेशक, पौधा संरक्षण (सभी)/सर्वेलेन्स पदाधिकारी पटना/सर्वेलेन्स शाखा मुख्यालय, पटना/किसान कॉल सेन्टर, पटना/जिला कृषि पदाधिकारी (सभी)/ उप/सहायक निदेशक, पौ0 सं0, (सभी)/उप कृषि निदेशक, सूचना, बिहार, पटना/ संयुक्त निदेशक (शष्य) सभी की सेवा में सूचनार्थ प्रेषित। आपसे आग्रह है कि किसानों के हित में उक्त सूचनाओं को प्रचारित–प्रसारित करने की कृपा की जाय।

प्रतिलिपिः– प्राचार्य, प्रसार प्रशिक्षण केन्द्र, मुशहरी, मुजफ्फरपुर, पटना, भोजपुर एंव पूर्णियाँ/वरीय वैज्ञानिक कीट/रोग, कृषि अनुसंधान संस्थान, राजेन्द्र कृषि विश्वविधालय, भीठापुर पटना/कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र (सभी)/निदेशक; प्रसार शिक्षा रा0 कृ0 वि0 वि0, पूसा समस्तीपुर/ बिहार कृषि विश्वविधालय, सबौर, भागलपुर की सेवा में समर्पित करते हुए अनुरोध है कि अपने अनुभवों के आधार पर अपना बहुमूल्य सुझाव देने की कृपा करेंगे।

प्रतिलिपिः– पौधा संरक्षण सलाहकार, भारत सरकार/निदेशक, आई0 पी0 एम0, भारत सरकार, पौधा संरक्षण संगरोध एवं संचयन निदेशालय, एन0 एच0–4 फरीदाबाद (हरियाणा) की सेवा में सादर सूचनार्थ समर्पित।

प्रतिलिपिः– कृषि निदेशक, बिहार, पटना/ प्रधान सचिव, कृषि विभाग, बिहार, पटना/कृषि उत्पादन आयुक्त, बिहार, पटना/विकास आयुक्त, बिहार, पटना की सेवा में सादर सूचनार्थ समर्पित।

08/04/15
संयुक्त निदेशक, पौधा संरक्षण
बिहार, पटना।

जैविक अपनायें, स्वच्छ उपजायें।
स्वच्छ खायें, स्वस्थ रहें ।।

April, 2015